मैथिलीशरण गुप्त (1886-1964)

B.A - Part II
Hindi (H)

Prof - Roushan Kumar
Hindi (Dept)
J.K. College Biraul

⇒ परिचय एवं कृतियाँ

मैथिलीशरण गुप्त द्विवेदी युग के सर्वश्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। वे राष्ट्रीय काव्यधारा के कवियों में विशिष्ट स्थान के अधिकारी हैं। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से 'साकेत' जैसे महाकाव्य की रचना करने वाले गुप्त जी पहले 'वैश्योपकार' में अपनी रचनाएं छपवाते थे, किन्तु 'सरस्वती' में अपनी रचना को प्रकाशित कराने की तीव्र आकांक्षा उनके हृदय में थी। उन्होंने 'रसिकेन्द्र' उपनाम से ब्रजभाषा में लिखी कविता सरस्वती के लिए भेजी किन्तु उनकी वह कविता सरस्वती में नहीं छपी और द्विवेदी जी ने उन्हें पत्र लिखकर सूचित किया कि 'सरस्वती' में हम बोलचाल की भाषा में लिखी गई कविताएं ही छपते हैं तथा यह भी लिखा कि 'रसिकेन्द्र' बनने का जमाना अब आ गया। गुप्त जी पर इन दोनों बातों का विशेष प्रभाव पड़ा। उन्होंने खड़ी बोली में कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया और 'उपनाम' से सदैव के लिए मुक्ति पा ली तत्पश्चात उन्होंने 'हेमन्त' नामक कविता सरस्वती के लिए खड़ी बोली में लिखकर भेजी, जो अनगढ़ एवं अस्त-व्यस्त थी किन्तु द्विवेदी जी ने उसका संशोधन करके सरस्वती में वह कविता छाप दी। यद्यपि कविता में इतना संशोधन परिवर्द्धन किया गया था। कि वह एक नई रचना ही बन गई थी तथापि उसके नीचे नाम मैथिलीशरण गुप्त का ही दिया गया था।

Scanned with CamScanner

निश्चय ही आचार्य द्विवेदी मैथिलीशरण गुप्त के गुरु एवं प्रेरक थे, इसीलिए उन्होंने अपने महाकाव्य साकेत में उनकी प्रेरणा को स्वीकार करते हुए श्लिष्ट शब्दों में यह स्वीकार किया :

करते तुलसीदास भी कैसे मानस नाद ?
महावीर का यदि उन्हें मिलता नहीं प्रसाद।

मैथिलीशरण गुप्त की प्रमुख रचनाएं हैं — रंग में भंग (1909), जयद्रथ वध (1910 ई.), भारत भारती (1912 ई.), पंचवटी (1925 ई.), झंकार (1929 ई.) साकेत (1931 ई.), यशोधरा (1932 ई.), द्वापर (1936 ई.), जयभारत (1952 ई.), विष्णुप्रिया (1957 ई.) आदि। इसके अतिरिक्त गुप्त जी ने प्लासी का युद्ध, मेघनाथ वध, वृत्र संहार नामक अनूदित काव्य भी रचे हैं।

साकेत : काव्य सौष्ठव —

हिन्दी में रामकथा पर कई महाकाव्य लिखे गये जिनमें प्रमुख हैं रामचरित मानस, रामचन्द्रिका, साकेत, जिसमें साकेत के माध्यम से गुप्त जी ने रामकथा की उपेक्षित पात्र उर्मिला को प्रस्तुत किया है। लगभग 15 वर्षों में कवि ने साकेत लेखन का कार्य प्रस्तुत किया।

गुप्त जी की नारी-भावना —

कविवर गुप्त जी महान कवि हैं। उनकी रचनाओं में राष्ट्रप्रेम, समाज सुधार, युग-निरूपण, भारतीय संस्कृति एवं नारी भावना का विशद चित्रण है। उन्होंने साकेत महाकाव्य में वियोगिनी उर्मिला का मातृत्व भाव की प्रबलता है मुख्य कैकेयी का, द्वापर काव्य में विधृता का।

यशोधरा खण्ड काव्य मे यशोधा का तथा विष्णुप्रिया में इसकी नायिका का चित्रण बड़े मनोयोग से किया है।

गुप्त जी के विचार →

अपने नारी संबंधी विचारों को व्यक्त करते हुए उनकी असामर्थ्य और असहायता पर दुःख व्यक्त किया है। यथा:

अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध और आँखो मे पानी॥

नारी पर लगाए बंधनों के प्रति –

नरकृत शास्त्रों के बंधन है सब नारी ही को लेकर।
अपने लिए सभी सुविधाएं, पहले ही कर बैठे नर॥

गांधी जी द्वारा सत्याग्रह आंदोल 'साकेत' मे कुछ इस प्रकार है

आओ यदि आ सको रौंद कर यहां।
यों कह पथ मे लेट गए लक्ष्मन वहां॥

इन पंक्तियों से गुप्त जी की राष्ट्रीय भावना स्पष्ट दिखाई देती है इन्ही राष्ट्रीयता के विचारों के पोषक होने के कारण महात्मा गांधी ने इन्हे 1936 ई. में काशी मे उन्हे राष्ट्रकवि की उपाधि से विभूषित किया।

Scanned with CamScanner